

**विचारशीलता स्त्री.** (तत्.) 1. किसी के विचारशील होने की अवस्था या भाव 2. विचार कर कार्य करने की प्रवृत्ति 3. चिंतनशीलता 4. मननशीलता।

**विचारशून्य वि.** (तत्.) 1. जिसके अपने कोई विचार या सिद्धांत न हो 2. जो किसी वांछित विषय पर विचार करने में सक्षम न हो 3. विवेकहीन 4. बुद्धिहीन या मूर्ख।

**विचारसमाधि स्त्री.** (तत्.) योग. 1. समाधि के भेदों में से एक 2. वितर्क समाधि से वह उच्चतर अवस्था जिसमें चित्त के विषय रूप इंद्रियाँ तथा चित्त की अनुभूति (प्रत्यय) तथा संस्कार रहते हैं।

**विचार सरणी स्त्री.** (तत्.) 1. किसी विषय पर विचार करने की पद्धति 2. चिंतन प्रक्रिया, विचार प्रणाली।

**विचार साहचर्य पुं.** (तत्.) मनो. मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के अंतर्गत ऐसी दो मानसिक अवस्थाएं जो परस्पर इस प्रकार जुड़ी रहती हैं कि एक का ध्यान करते ही दूसरी का भी उसी क्षण ध्यान आ जाता है टि. यह विचार साहचर्य कवि की कल्पना के लिए उपयोगी होता है।

**विचार स्वातंत्र्य पुं.** (तत्.) 1. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता 2. विचार करने और अपने विचारों को निर्भय होकर खुलकर अभिव्यक्त करने की आजादी।

**विचाराधीन वि.** (तत्.) 1. वह विषय या कार्य जिस पर अभी विचार किया जा रहा हो किन्तु उस पर निर्णय न लिया जा सका हो 2. जिसके बारे में न्यायालय में मुकदमा चल रहा हो तथा निर्णय न लिया जा सका हो।

**विचारालय पुं.** (तत्.) 1. वह स्थान जहाँ पर बैठकर लोग किसी विषय पर अपने-अपने विचार व्यक्त करते हैं तथा किसी सर्वसम्मत विचार की पुष्टि करते हैं 2. न्यायालय/अदालत।

**विचारित वि.** (तत्.) 1. जिस बात या विषय पर अच्छी प्रकार से विचार किया गया हो 2. जो

सोच-समझ कर किया गया हो विलो. अविचारित।

**विचारी वि.** (तत्.) 1. विचार करने वाला, विचारक, चिंतक 2. विवेकशील 3. समझदार 4. विचरण करने वाला, इधर-उधर घूमने वाला, विचरणशील 5. विचार करके जैसे- मुनि यह बचन न कहेउ विचारी -रामचरित मानस।

**विचार्य वि.** (तत्.) 1. जो बात या विषय विचार करने योग्य हो। विचारणीय 2. जो समझने लायक हो विलो. अविचार्य।

**विचालन पुं.** (तत्.) 1. किसी को विचलित करना 2. किसी को विशेष ढंग से चलाना 3. दूर करना, हटाना 4. नष्ट करना 5. संदिग्ध।

**विचिंतन पुं.** (तत्.) 1. (किसी के बारे में) फिक्र-चिंता करना, सोचना 2. अधिक चिंतन-मनन।

**विचिंतनीय वि.** (तत्.) 1. विशेष रूप से चिंतन करने योग्य, विचारणीय 2. संदिग्ध 3. जिसकी देखभाल की जाय।

**विचिंत्य वि.** (तत्.) ऐसा सोच कर।

**विचिकित्सा स्त्री.** (तत्.) 1. किसी विषय की जानकारी से संबंधित होने वाला संदेह, शक, शंका 2. अनिश्चय 3. भूल-चूक।

**विचित्ति स्त्री.** (तत्.) 1. चित्त का स्थिर न रहना 2. विभ्रम 3. अनमनापन 4. बेहोशी/मूर्छा।

**विचित्र वि.** (तत्.) 1. कई प्रकार के रंगों या वर्णों वाला 2. अद्भुत, अनोखा 3. असाधारण 4. विस्मित करने वाला 5. सुंदर 6. मनोरंजक 7. चित्रित 8. रंगा हुआ, रंग-बिरंगा पुं. रौच्य मनु का एक पुत्र काव्य. एक अर्थालंकार जिसमें इष्ट फलसिद्धि के लिए उल्टा प्रयत्न दिखाया जाता है।

**विचित्रवीर्य पुं.** (तत्.) महाभारत काल में शांतनु व सत्यवती के द्वितीय पुत्र जो निःसंतान मृत्यु को प्राप्त हुए तथा बाद में द्रुपद व्यास ने इनकी पत्नियों से नियोग द्वारा धृतराष्ट्र और पांडु को पैदा किया था।

**विचित्रता स्त्री.** (तत्.) 1. किसी विषय या वस्तु के विचित्र होने की अवस्था या भाव 2. रंग विभिन्नता